

बी.ए. द्वितीय वर्ष
हिन्दी साहित्य : प्रथम प्रश्न पत्र

रीतिकालीन काव्य

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 100

पाठ्यांश :

1. केशवदास : रामचन्द्रिका -

- सरस्वती-वन्दना - बानी जगसानी की तदपि नई नई ॥
राम-वन्दना - पूरण पुराण मुक्ति को ॥
राम परशुराम- संवाद - विस्वामित्र विदा भये मैं तनमन सुख प्रायो ॥
पंचवटी-वन वर्णन - फल फूलनि पूरे मधु जाने ॥
- सब जाति फटी पंचवटी ॥
हनुमान-लंका गमन - हरि कैसो वाहन लंक को ॥
रावण-प्रासाद - तब हरि रावन पुर सूतो ॥
- कहु किन्नरी सीता ॥
सीता-दर्शन - धरे एक बेनी पीयूष भीनी ॥
- किंधी जीव की बहायो ॥

2. बिहारी :

- मेरी भव बाधा हरी.....
- नीकी दई अनाकनी.....
- झीने पट में झलमली.....
- लग्यौ सुमनु हवै है सफलु.....
- अजौ तरथौना ही रह्यौ.....
- जम करि-मुंह तरहरि पर्यौ.....
- तौ पर बारौ उरबसी.....
- कहत नटत, शीझत, खिजत.....
- कौन भाति रहि है बिरदु.....
- नहिं परागु, नहिं मधुर मधु.....
- मगल बिंदु सुरंग, मुख ससि.....
- अग-अग नग जगमगें.....
- कब को टेस्त दीन रट.....
- पत्रा ही तिथि पाइयै.....
- तंत्री नाद कवित्त-रस.....
- मकरकृत गोपाल कै.....
- या अनुरागी चित की.....
- करी छिरह ऐसी.....
- जप माला, छापा, तिलक.....
- तजि तीरथ, हरि-राधिका.....
- औंघाई सीसी, सु लखि.....
- मैं बरजी कै चार तू.....
- आउं दे आले बसन.....
- स्वारथ सुकृपु न.....
- सीस-मुकुट, कटि काछनी.....
- हरि-छवि-जल जब तै.....


प्रभारी अधिकारी
अकादमिक-प्रथम

- इत आवति वलि जाति.....
 - भूषण-भारु सभारिहै.....
 - कहत सबे बेदी दिवे.....
 - कोरि जतन कोऊ करी.....
 - लिखन वैठि जाकी सबी.....
 - दृग उरझत, दूटत कुटुम.....
 - रनित भृंग घटावली.....
 - अधर धरत हरि कै परत.....
 - करी कुबत जग.....
 - बतरस लालच लाल की.....
 - कहताने एकत बसत.....
 - डिगत पानि डिगुलात गिरि.....
 - धिरजीवी जोरी जुरै.....
 - सघन कुज छाया सुखद.....
- (बिहारी रत्नाकर: सं. जगन्नाथदास रत्नाकर)

3. देव:-

- सुनी कै परम पद.....
- डार द्रुम पलना.....
- कथा में न कथा में.....
- जब ते कुंवर कान्ह.....
- प्रेम गुन बांधि.....
- बंसुरी सुनि देखन दौरि.....
- देव में रीस बसायो.....
- बरुनी बघम्बर में गूदरी.....
- धार में धाय घसी निरघार हवै.....
- ऐसो जो ही जानतो कि.....
- रीझि रीझि, रहसि रहसि.....
- कोई कहौ कुलटा.....
- राधिका कान्ह को ध्यान करै.....
- झहरि, झहरि झीनी बूँद.....
- सासन ही सौं.....
- सहर-सहर सौधों सीतल.....
- खेलत फाग.....
- आई बरसाने ते.....
- जाके न काम न क्रोध.....
- विद्रुम और बंधूक जपा.....

4. भूषण :

- साहि तनै सरजा समरस्थ.....
- देखत ऊँचाई उघरत.....
- कामिनी कंत सौं.....
- पूरब के उत्तर के.....
- दारुन दुगुन दुरजोधन.....
- साजि चतुरंग सैन.....

- ऊँचे घोर मन्दर के.....
- उतरि पलंग ते न.....
- इन्द्र जिमि जम पर.....
- कलियुग जलधि अपार.....
- छूटत कमान बान.....
- जिम फन फूँकार.....
- गरुड को दावा सदा.....
- बेद राखे विदित.....
- आपस की फूट ही ते.....
- मुज मुजगेस की वे.....
- हैबर हरदट साजि.....
- चाक चक चमू के.....
- राजत अखंड तेज.....
- देस रहबदिट आयो.....

(भूषण ग्रंथावली : स. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

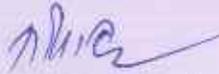
5. घनानंद :

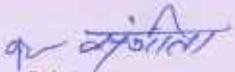
- रूपनिघान सुजान सखी.....
- आखि ही भेरी वै.....
- हीन भएँ जल मीन.....
- भीत सुजान अनीति करो.....
- आस ही अकास मधि.....
- जेतो घट सौधौ.....
- चोप चाह चायनि.....
- एरे बीर पौन.....
- कारी कूर कोकिला.....
- प्रीतम सुजान मेरे हित के.....
- छवि को सदन.....
- वहै मुसवथानि.....
- अन्तर उदेग दाह.....
- हिये में जु आरति.....
- दिननि के फेर सौ.....
- कौन की सरन जैये.....
- भोर ते सौँझ लौ.....
- सोये न सोइयो.....
- निस दौस खरी.....
- अति सूधो सनेह को.....

(घनानंद कवित्त : स. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

6. पद्माकर :

- विधि के कण्डल की.....
- गीर के निकट रेनु.....
- कलित कपूर में न.....
- जमपुर द्वारे लगे.....
- कूरम पे कोल.....
- पात बिन कीन्हें ऐसी भाति.....


प्रभारी अधिकारी
अकादमिक-प्रथम


5 | Page

- कूलन में केलि में.....
 - हवे शिर मन्दिर में.....
 - भोग में रोग.....
 - ब्याध हू ते बिहद.....
 - एके संग धाये.....
 - सम्पति सुमेर की.....
 - औरे भाति कुजन में.....
 - फाग की भीरे.....
 - सजि बृज घद पै.....
- (पदमाकर ग्रंथावली) : सं. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)

7. सेनापति :

- सुस्तरु सार की.....
 - करत कलोल युति दीरघ.....
 - कालिदी की धार निरधार है.....
 - सेनापति उनए नए जलद सावन के.....
 - केतकि असोक नव चम्पक.....
 - मालती की माल तेरे तन की.....
 - चित चुभी आनि, मुसकानि.....
 - बरन बरन तरु फूले.....
 - छूटत फुहारे सोई बरसा.....
 - सीत को प्रबल सेनापति.....
- (सेनापति कृत कवित्त रत्नाकर सां. उमाशंकर शुक्ल)

8. आलम :

- पौन के परस.....
 - कहूँ भूल्यौ बेनु.....
 - अंग अंग जग जोति.....
 - अटा यद्दी हुती.....
 - चंद को चकोर देखै.....
 - निधरक भई अनुगवति.....
 - तरनिजा तट बसी-बट.....
 - वारै ते न पलक.....
 - पंकज पटीर देखे.....
 - उत्तपनि रत रितुपति.....
- (आलम ग्रंथावली : सं. विद्यानिवास मिश्र)

2. रीतिकाल का इतिहास

3. काव्य रीतियां, काव्यगुण, काव्य दोष, रस-परिभाषा, प्रकार, रसावयव अंक विभाजन :

- | | | |
|--|---|------------------|
| प्र. 1 कुल चार व्याख्याएँ (काव्य संकलन से) (आन्तरिक विकल्प देय) | - | 08 X 04 = 32 अंक |
| प्र. 2, 3, 4 कुल तीन आलोचनात्मक प्रश्न (आन्तरिक विकल्प देय) (काव्य संकलन पर आधारित) | - | 15 X 03 = 45 अंक |
| प्र. 5 (अ) कुल तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 50 शब्द) | - | 05 X 03 = 15 अंक |
| (ब) कुल चार अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 20 शब्द) | - | 02 X 04 = 08 अंक |
- (प्रश्न 5 दूसरी व तीसरी इकाई पर आधारित होगा)

बी.ए. द्वितीय वर्ष
हिन्दी साहित्य : द्वितीय प्रश्न पत्र
नाटक एवं एकांकी

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 100

पाठ्य पुस्तकें :

1. नाटक:-

ध्रुवस्वामिनी : जयशंकर प्रसाद

2. एकांकी:-

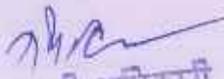
- | | | |
|------------------------|---|-------------------|
| 1. रामकुमार वर्मा | - | दीपदान |
| 2. भुवनेश्वर | - | ऊसर |
| 3. उदयशंकर भट्ट | - | पर्दे के पीछे |
| 4. लक्ष्मीनारायण मिश्र | - | बलहीन |
| 5. उपेन्द्रनाथ अशक | - | सूखी ढाली |
| 6. जगदीश चन्द्र माथुर | - | रीढ़ की हड्डी |
| 7. विष्णु प्रभाकर | - | और वह जा न सकी |
| 8. लक्ष्मीनारायण लाल | - | बसन्त ऋतु का नाटक |

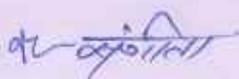
3. नाटक का उद्भव एवं विकास

4. एकांकी का उद्भव एवं विकास

अंक विभाजन :

- | | | |
|--|---|------------------|
| प्र. 1 कुल चार व्याख्याएं (दो नाटक से, दो एकांकी संग्रह से) (आन्तरिक विकल्प देय) | - | 08 X 04 = 32 अंक |
| प्र. 2, 3 व 4 कुल तीन आलोचनात्मक प्रश्न (एक नाटक पर, दो एकांकी संग्रह पर) (आन्तरिक विकल्प देय) | - | 15 X 03 = 45 अंक |
| प्र. 5 (अ) कुल तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 50 शब्द) | - | 05 X 03 = 15 अंक |
| (ब) चार अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (विकल्प देय) (उत्तर सीमा 20 शब्द) (प्रश्न 5 तीसरी व चौथी इकाई पर आधारित होगा) | - | 02 X 04 = 08 अंक |


गभारी अधिकारी
द्वितीय-प्रथम


7 | Page